॥ ओ३म् ॥

डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

पूनम सूरी
प्रधान

स्वामी सुमेधानंदजी को एक आर्यभक्त की श्रद्धांजलि

'श्रद्धेय स्वामी सुमेधानंदजी नहीं रहे' समाचार सुनते ही मन अत्यंत दुःखित हुआ। उनके अन्तिम दर्शन का अवसर न मिल सका, इसका आजीवन खेद रहेगा। सोच रहा था कि 19-20 अगस्त को हमीरपुर में कार्यक्रम के बाद अपने साथियों को लेकर चम्बा पहुंचकर स्वामीजी के दर्शन से कृत्कृत्य हो जाऊँगा। ईश्वर की इस विशाल व्यवस्था में मेरी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी, उसने मुझे भी अस्वस्थ कर दिया। वर्तमान विज्ञान ने इतना उपकार तो अवश्य किया कि टेलीफोन के ज़रिये स्वामीजी से संपर्क रहा।

स्वामी सुमेधानंदजी को मैं ऋषि-परम्परा का संन्यासी मानता हूँ और उनका आज की परिस्थितियों में हमें छोड़ जाना एक ऐसी रिक्तता पैदा कर गया है जिसका भरा जाना यदि असंभव नहीं तो अत्यंत कठिन अवश्य है। सामान्यतः गृहस्थ और वानप्रस्थ होने के बाद 75 वर्ष की आयु में जिस संन्यास आश्रम को अंगीकार किया जाता है, स्वामी सुमेधानंदजी ने 33 वर्ष की आयु में ही ऋषि (दयानन्द) निर्वाण उत्सव के दिन 1970 में स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से उस संन्यास की दीक्षा ली। 6 वर्षों तक दयानन्द मठ, दीनानगर में उनके निवास काल में स्वामी सर्वानन्दजी महाराज उनके वैराग्य और योग्यता को पहचान गये थे। **'वा ब्रह्मचर्यादेव व्रजेत्'** इस ब्राह्मण वचन का पालन हुआ। विद्वत्ता, जिन्तेन्द्रियता, विषय भोगों की कामना का अभाव और परोपकार करने की इच्छा भांपकर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने गोपाल नामक ब्रह्मचारी को स्वामी सुमेधानन्द नाम देकर संन्यास धर्म निभाने की आज्ञा दी। यह ऋषि परम्परा का निर्वाह था।

स्वामी सुमेधानंदजी माँ गायत्री के समर्पित उपासक रहे। 45 वर्षों के संन्यास जीवन में स्वामी जी ने शिक्षा, स्वास्थ्य, दीन-दुःखियों की सेवा-सहायता के अतिरिक्त चम्बा जैसे दुर्गम स्थान पर मूर्ति-पूजा, अंध-विश्वासों तथा आडम्बरों के विरुद्ध निरन्तर लम्बी अवधि तक चलने वाले यज्ञों से इस घाटी में सच्ची आध्यात्मिकता, ईश्वर के सच्चे स्वरूप और सच्ची उपासना पद्धति को प्रचलित करने का प्रयत्न किया। संन्यास धर्म के इस महान उद्देश्य को प्राप्त करने के साथ-साथ स्वामीजी ने **'एकरात्रिं वसेद ग्रामे'** नारद परिव्राजकोपनिषद् के इस वचन के अनुसार चम्बा से निकल कर देश के विभिन्न राज्यों में ही नहीं विदेशों में भी वेद-ज्ञान और ऋषि-सन्देश का प्रचार किया।

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, इसकी 800 से ऊपर संस्थाओं, 20 लाख विद्यार्थियों और 60,000 अध्यापक-अध्यापिकाओं तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और इससे संबंधित आर्य समाजों पर स्वामीजी की विशेष कृपा रही। अभी एक वर्ष पहले ही शरीर की अस्वस्थता की परवाह किये बिना स्वामीजी महात्मा हंसराज उत्सव की अध्यक्षता करने साहिबाबाद आए थे। इससे पूर्व डी.ए.वी. के प्रथम विश्वविद्यालय की स्थापना पर अपनी प्रसन्नता और आशाओं को प्रकट कर उन्होंने हमें अनुग्रहीत किया था। हमारा कोई भी राष्ट्रीय स्तर का समारोह उनके बिना नहीं हुआ। स्वामीजी अपने स्वप्नों के सार्थक करने हेतु डी.ए.वी. को एक सशक्त माध्यम के रूप में देखते थे। वैदिकयति मंडल का प्रधान होना, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्विरोध प्रधान स्वीकार किया जाना स्वामीजी की निर्विवाद छवि तथा सर्वप्रियता के प्रमाण हैं। स्वामी सुमेधानंदजी परस्पर सामनस्य, अविद्वेष तथा एकता की आवश्यकता को बड़े मार्मिक शब्दों में व्यक्त करते रहे। भावी-पीढ़ी में राष्ट्रीयता और सच्चरित्रता उनका सबसे बड़ा सरोकार रही।

मित्रो, मुझे ऋषि दयानन्द के पूना में दिये गये अंतिम प्रवचन का स्मरण हो रहा है। अपने जीवन का परिचय दे चुकने के बाद उन्होंने कहा—"आर्य धर्म की उन्नति के लिए मुझ जैसे बहुत से उपदेशक होने चाहिएं। ऐसा काम अकेला आदमी भली प्रकार नहीं कर सकता।" आगे कहा—"सर्वत्र आर्य समाज कायम होकर मूर्तिपूजा आदि दुराचार दूर हो जाएं। वेद-शास्त्रों का सच्चा अर्थ सबके समझ में आवे और उन्हीं के अनुसार लोगों का आचरण होकर देश की उन्नति हो जावे। पूरी आशा है कि आप सज्जनों की सहायता से मेरी यह इच्छा पूर्ण होगी।" ऋषि के यह वचन आपकी सेवा में रखने का मेरा विशेष अभिप्राय है। ऋषि दयानन्द की इच्छा 'कि देश में बहुत से उपदेशक हों' पूरी कैसे हो आज यह यक्ष-प्रश्न है।

बड़ी ही विनम्रता से आर्य समाज की वर्तमान दशा पर मैंने भी समय-समय पर अपनी चिंता जताई है। आइए, आज स्वामी सुमेधानंदजी को एक सच्ची श्रद्धांजलि यह संकल्प करके दें कि जिन आध्यात्मिक पीड़ाओं को वे अपने साथ ले गये हैं उनसे आर्य समाज को मुक्ति दिलाएंगे। स्वामीजी वास्तव में हमारे बीच से गये भी नहीं हैं। उनके वैयक्तिक गुण—विद्या-प्रेम, गायत्री उपासना, दीनों की सहायता, सच्चे ईश्वर और सच्ची उपासना के प्रति श्रद्धा, एक-एक गुण अपने आप में एक-एक सुगंधित पुष्प है। आज हम यहां एकत्र हैं तो यह संकल्प लें कि हम इन गुणों में से कम-से-कम एक-एक गुण अपने जीवन में धारण करेंगे और फिर जब भी हम एकत्र हों तो ये सारे गुण एकत्र होकर अपने सुवास से वातावरण को सुगंधित करें जिनमें स्वामी सुमेधानंदजी का प्रसन्न चेहरा हम सब को नज़र आए। ईश्वर हमें सामर्थ्य दे कि हम इन संकल्पों को पूर्ण कर सकें।

"ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो"

पूनम सूरी, *प्रधान*

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, चित्रगुप्त रोड, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55 Ph: 011-23543418, ई-मेल : president@davcmc.net.in